

सबसे बेहतरीन और पाक मज़हब

इंजील : याकूब 1:1-27

जनाब याकूब ने, जो अल्लाह रब्बुल अज़ीम और ईसा^(अ.स) के खिदमतगार थे, पूरी दुनिया में फैले हुए अल्लाह के बन्दों को सलाम कहा।⁽¹⁾ और कहा:

मेरे भाईयों और बहनों, तुम मुश्किल में भी खुश रहा करो।⁽²⁾ क्योंकि तुम ये जानते हो मुश्किलें तुम्हारे ईमान का इम्तिहान लेती हैं, और तुम्हें मज़बूत बनने में मदद करती हैं।⁽³⁾ अपनी लगातार मेहनत से अच्छाई को हासिल करो। ये तुमको पूरी तरह से बेहतरीन बना देगी और तुम्हारी हर ज़रूरत को पूरा करेगी।⁽⁴⁾ लेकिन अगर तुम्हें अक्लमंदी की ज़रूरत है तो वो तुम अल्लाह ताअला से माँगो। जो भी उस रब से अक्लमंदी माँगता है उसे वो दरियादिली से अता करता है। वो किसी भी माँगने वाले को कभी मायूस नहीं करता।⁽⁵⁾ लेकिन तुम अल्लाह ताअला पर ईमान रख कर माँगो; और तुम्हारे दिल में कोई शक नहीं होना चाहिए। जो शक करता है तो वो समंदर में एक लहर की तरह है, जिसको हवा धक्का दे कर उछाल देती है।⁽⁶⁾ इस तरह के इंसान को ये सोच लेना चाहिए कि उसे अल्लाह रब्बुल करीम से कुछ हासिल नहीं होगा।⁽⁷⁾ जो शक करता है वो कभी कोई फ़ैसला नहीं कर पाता और लड़खड़ाता रहता है।⁽⁸⁾

एक ईमान वाले गरीब इंसान को जब अल्लाह ताअला की नेमतें हासिल हों तो उसे खुश हो जाना चाहिए।⁽⁹⁾ और एक अमीर इंसान को अल्लाह ताअला का शुक्र अदा करना चाहिए कि जब अल्लाह ताअला उसको झुका दे और उसके दिल में एहसास पैदा करे कि एक दिन वो भी घाँस में उगे एक फूल की तरह ही खत्म हो जाएगा।⁽¹⁰⁾ सूरज के उगने से गरम हवा चलती है और घाँस सूख जाती है। घाँस में उगे ख़ूबसूरत फूल टूट कर गिर जाते हैं और बर्बाद हो जाते हैं। इसी तरह से एक अमीर आदमी अपने रोज़ के काम करते करते इस दुनिया से चला जाएगा।⁽¹¹⁾

वो कितना खुश नसीब है जो मुसीबत में भी हिम्मत से काम लेता है। जब वो इंसान अपना ईमान साबित कर देता है तो अल्लाह ताअला उसको कभी ना खत्म होने वाली ज़िंदगी अता करता है। अल्लाह ताअला ने हर उस इंसान को ज़िंदगी देने का वादा किया है जो उससे मुहब्बत करता है।⁽¹²⁾

जब कोई इंसान बहक जाए तो वो कभी ना कहे, “परवरदिगार मुझे बहका रहा है।” नही! अल्लाह रब्बुल करीम कभी किसी को नहीं बहकाता और ना ही शैतान उसको बहका सकता है।⁽¹³⁾ इंसान उस वक़्त बहकता है जब वो अपनी ख्वाहिशों को पूरा करने के लिए ग़लत रास्ते पर चलने लगता है।⁽¹⁴⁾ जब इंसान के दिमाग़ में बुरी ख्वाहिश अपना घर बना लेती है तो फिर वो गुनाह को पैदा करती है और जब वो गुनाह बढ़ता है तो फिर वो उसे मौत कि तरफ़ ले जाता है।⁽¹⁵⁾

मेरे अजीज़ भाईयों और बहनों, तुम ग़लत रास्ते पर मत चलो।⁽¹⁶⁾ हर अच्छा और बेहतरीन तोहफा उस परवरदिगार की तरफ़ से ही आता है जो रौशनी को बनाने वाला है। अल्लाह ताअला ना ही बदलता और ना ही परछाई की तरह चारों तरफ़ घूमता है।⁽¹⁷⁾ अल्लाह रब्बुल अज़ीम ने हमें सच्चे कलाम के ज़रिये ज़िंदगी अता करी है। हम लोग उसकी मख़लूक की ज़िंदा मिसाल हैं।⁽¹⁸⁾

सुनो, मेरे भाईयों और बहनों! हमेशा जल्दी सुनो और आराम से बोलो। बहुत जल्दी से नाराज़ ना हो।⁽¹⁹⁾ इंसान का गुस्सा उसको इंसाफ़ करने से रोकता है।⁽²⁰⁾ तो हर तरह के गुनाह और बुराई से ख़ुद को दूर कर लो। फ़ख़ ना करो बल्कि अल्लाह ताअला के कलाम को अपने दिलों में बसा लो क्योंकि इस कलाम में तुम्हारी रूह को बचाने की ताक़त है।⁽²¹⁾

साबित करो कि तुम वो इंसान हो जो अल्लाह ताअला के कलाम पर अमल करता है; उन लोगों की तरह ना बनो जो सुनते हैं, लेकिन अमल नहीं करते। वो अपने आपको बेवकूफ़ बना रहे हैं।⁽²²⁾ अल्लाह ताअला के कलाम को सुन कर उस पर अमल ना करने वाला इंसान ऐसा है की जैसे उसने अपने चेहरा को आईने में देखा।⁽²³⁾ वो अपना चेहरा आईने में देखता है, फिर अपनी नज़र हटते ही भूल जाता है कि वो कैसा दिखता था।⁽²⁴⁾ लेकिन सच में वही इंसान खुश है जो अल्लाह ताअला के कलाम को बहुत ध्यान से पढ़ता है। सिर्फ़ उन लोगों को आज़ादी मिलती है जो अल्लाह ताअला के कलाम पर अमल करते हैं और उसी के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारते हैं। जो इंसान कलाम को सुन कर उसे कभी नहीं भूलता, और उसपर अमल करता है, तो उसमें उसे बरकत हासिल होती है।⁽²⁵⁾

एक इंसान ख़ुद को मज़हबी समझता है, लेकिन अगर वो अपनी ज़बान पर काबू नहीं रख सकता तो वो अपने आपको बेवकूफ़ बना रहा है। उसके मज़हब का कोई फ़ायदा नहीं।⁽²⁶⁾ सबसे बेहतरीन और पाक मज़हब, जिसको हमारा परवरदिगार पसंद करता है, वो ये है: परेशान हाल यतीम बच्चों और बेवाओं की देखभाल करना; और अपने आपको दुनिया की चमक से बचाना।⁽²⁷⁾